21

321hi21

मानव विकास के मुद्दे व चिंताएं

आप भिन्न–भिन्न उम्र में बच्चों के विकास के विषय में व उनके विकास को प्रभावित करने वाले कारकों के विषय में पहले ही पढ़ चुके हैं, लेकिन कुछ बच्चों को अपने पूर्ण विकास के लिये आवश्यक सुविधाएं व वातावरण नहीं मिल पाता। उदाहरण के लिये भारतीय घरों में लड़कियों की उपेक्षा एक जाना माना तथ्य है। कई बच्चों को तो स्कूल जाने की अपेक्षा खतरनाक व्यवसायों में अपनी गरीबी के कारण काम करना पड़ता है, जबकि अन्य कई असामाजिक गतिविधियों में लिप्त हो जाते हैं। कई बच्चे विकलांग होते हैं। जिन बच्चों को एड्स नामक बीमारी है या जिनके माता–पिता को एड्स है, उन्हें समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है। कुछ बच्चों को नशे की लत लग जाती है– कभी भूले–भटके, कभी हम उम्र साथियों की वजह से। ऐसे सब बच्चों को हमारी आवश्यकता है। इस पाठ में हम ऐसे बच्चों से संबंधित विशेष मुद्दों के विषय में पढ़ेंगे और उनकी सहायता के कुछ तरीकों की बात करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप निम्न करने में सक्षम हो सकेंगे:

- लड़कियों के प्रति बढ़ते भेदभाव की व्याख्या करना;
- 'बाल अपराधी' शब्द की परिभाषा व इसके कारणों की विवेचना करना;
- बाल श्रम के परिणामों का बाल विकास पर प्रभाव की व्याख्या;
- आर्थिक व सामाजिक रूप से पिछड़े बच्चों की समस्याओं के निवारण के लिये सुझाव देना;
- बच्चों की कुछ शारीरिक विकलांगताओं का सूचीकरण, उनकी परेशानियों व विकलांग बच्चों की सहायता के लिए सुझाव देना;
- मंद बुद्धि बच्चों की सहायता के लिये दिशा निर्देश बनाना;

टिप्पणी

- एचआईवी तथा 'एड्स' को परिभाषित करना तथा 'एड्स' से संबंद्ध भ्रांतियां बताना;
- सुरक्षित मातृत्व के तरीकों का सुझाव देना जिससे अस्वस्थता व मृत्यु दर कम हो;
- नशीले पदार्थों के सेवन के लक्षण तथा परिणामों की व्याख्या करना।

21.1 बालिकाओं से भेदभाव

नीचे लिखी कहानी पढ़ें –

सीमा एक झोंपड़ी में रहने वाली 10 वर्षीय लड़की है। वह 5 बजे सवेरे उठकर दूसरे घरों में काम करने के लिये जाती है। उसके बड़े भाइयों को पढ़ाई में दिलचस्पी न होने के बावजूद भी जबरन स्कूल भेजा जाता है। जब भी सीमा स्कूल जाने की जिद करती है, उसके माता–पिता द्वारा उसे डाँट दिया जाता है। उसके भाइयों को घर के लिये वरदान समझा जाता है जबकि सीमा को बोझ।

इस कहानी को पढ़कर आपको सीमा के जीवन के विषय में कैसा लगता है? क्या यही भारत की बहुत सी लड़कियों की स्थिति नहीं है? भारत में लड़कियों का जीवन कठिन है। उनके प्रति जन्म से ही भेदभाव बरता जाता है। कई घरों में लड़कियाँ अवांछित होती हैं व उनकी देखभाल भी ढंग से नहीं की जाती और उन्हें तुच्छ समझा जाता है। क्या आप लड़कियों के प्रति भेदभाव की कुछ बातें बता सकते हैं? यहाँ कुछ के विषय में बताया जा रहा है–

भारतीय परिवार में पहले खाना कौन खाता है? लड़कियाँ? नहीं, हमारे देश की माताएं पहले अपने पतियों व लड़कों को खाना परोसती हैं। वे लड़कियों को बचा–खुचा खाना ही परोसती हैं, जो गुणवत्ता व मात्रा में काफी कम होता है। उदाहरण के लिये कई बार लड़कियों को पर्याप्त मात्रा में दाल, रोटी व सब्जी भी नहीं मिलती। खाना खिलाने में यह भेदभाव जन्म से ही प्रारंभ हो जाता है। क्या आप जानते हैं कि लड़कियाँ की अपेक्षा लड़कों को ज्यादा देर तक माँ का दूध पिलाया जाता है?

जब एक व्यक्ति को पर्याप्त मात्रा में भोजन नहीं मिलता तब क्या होता है? उस व्यक्ति की रोगप्रतिरोधी क्षमता कम हो जाती है और वह जल्दी–जल्दी बीमार पड़ने लगता है। जब लड़कियाँ बीमार पड़ती हैं तब क्या उन्हें डॉक्टर के पास ले जाया जाता है? नहीं, क्योंकि अच्छा स्वास्थ्य लड़कियों के लिये महत्त्वपूर्ण नहीं समझा जाता। परिणामस्वरूप कई लड़कियाँ अपना पहला जन्मदिन भी नहीं मना पातीं। इस प्रकार से लड़कियों को पोषण व स्वास्थ्य जैसी बुनियादी सुविधाएं भी नहीं मिल पाती हैं।

क्या स्कूल जाने वाली लड़कियों की संख्या लड़कों के ही बराबर होती है? इसका उत्तर भी ना ही है! क्योंकि कई लड़कियों को प्राथमिक विद्यालय से ही निकाल लिया जाता है। बहुत छोटी उम्र से ही लड़कियाँ अपनी माँ के साथ घर का काम करना प्रारंभ कर देती हैं।

टिप्पणी

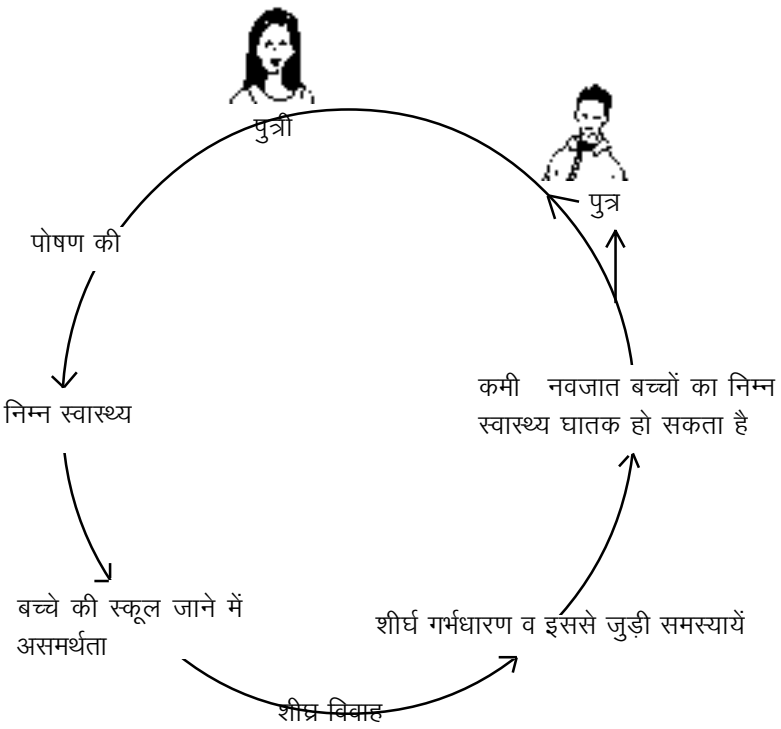

चित्र 21.1: अनंत चक्र

21.1.1 शिक्षा की भूमिका

एक लड़की के जीवन में शिक्षा क्या भूमिका निभाती है? लड़कियां ही बाद में अपने परिवार के हर सदस्य का जीवन बुनती हैं। इसलिये उसके लिये शिक्षा बेहद महत्त्वपूर्ण है। शिक्षा लड़कियों की निम्न प्रकार से मदद करती है:

1. शिक्षा लड़कियों में जागरूकता लाती है। शिक्षा से उन्हें पता चलता है कि उनके आस–पास क्या हो रहा है, क्या अच्छा है और क्या बुरा। शिक्षित लड़कियां स्वयं को और अपने घर को कुशलतापूर्वक चलाती हैं। उदाहरण के लिये एक उपभोक्ता के रूप में उन्हें अपने अधिकारों का ज्ञान होता है और वे कम पैसे में अधिक उपयोगी वस्तु खरीद सकती हैं व अपने घर की आय व व्यय का लेखा जोखा रख सकती हैं।
2. शिक्षा से लड़कियों को आर्थिक स्वतन्त्रता मिलती है। शिक्षा लड़कियों में आत्म विश्वास व कौशल जगाती है जिससे यदि आवश्यकता पड़े तो वे कोई भी व्यवसाय करके अपने परिवार की आर्थिक सहायता कर सकती है।
3. शिक्षित लड़कियां, माँ बनने के बाद अपने बच्चों की पढ़ाई–लिखाई में मदद कर सकती हैं। शिक्षित माँ अपने बच्चों में अच्छी आदतें व मूल्य विकसित करने में सक्षम होती हैं।
4. शिक्षित माँ अपने बच्चों की दैनिक समस्याओं को समझकर उनका सही मार्गदर्शन कर पाती है।

टिप्पणी

यदि माता–पिता अपनी पुत्री को शिक्षित करते हैं तो वे न केवल अपनी बेटी की मदद करते हैं बल्कि उसको एक अच्छी बहू, पत्नी व माँ बनने में भी मदद करते हैं। इससे समाज की भी सहायता होती है। लड़कियों के साथ होने वाले भेदभाव के विषय में पढ़ने के बाद आप अपनी बेटी के साथ किस प्रकार व्यवहार करेंगे? बालिकाओं के प्रति समाज का नजरिया बदलने में आपकी क्या भूमिका होगी?

पाठगत प्रश्न 21.1

1. लड़कियों के प्रति होने वाले भेदभाव के तीन संकेतक बताइये। लड़कियों के प्रति भेदभाव बढ़ता जाता है क्योंकि वे –
   (1) .....
   (2) .....
   (3) .....
2. शिक्षा से लड़कियों की मदद किस प्रकार होती है? ऐसे तीन तरीके बताइये।
   (1) .....
   (2) .....
   (3) .....

21.2 बाल अपराध क्या हैं?

क्या आप प्रतिदिन अखबार पढ़ते हैं? इसके मुख्य समाचार क्या होते हैं? ये समाचार किन लोगों के बारे में होते हैं? अधिकतर बच्चे व किशोरों के बारे में समाचार पढ़ने को मिलते हैं। क्या उनका व्यवहार सामाजिक रूप से स्वीकृत होता है? नहीं; क्योंकि यह असमाजिक व्यवहार है।

चित्र 21.2 : बाल अपराध

> बाल अपराधों का अर्थ है छोटे बच्चों द्वारा कानून का उल्लंघन (16 साल से कम आयु का लड़का और 18 वर्ष से कम उम्र की लड़की) और कानूनन उन्हें सजा भी नहीं दी जा सकती।

क्या आप उन व्यवहारों की सूची बना सकते हैं जिन्हें बाल अपराध कहा जाता है? हाँ! उनमें से कुछ हैं–

(1) जालसाजी
(2) हिंसा
(3) चोरी
(4) आत्मघात
(5) झूठ बोलना
(6) यौन अपराध
(7) नशीली दवाओं व्यापार

21.2.1 बाल अपराध के कारण

छोटे बच्चों में बाल अपराध के कई कारण होते हैं, उनमें से कुछ निम्न हैं।

गरीबी बाल अपराध का मुख्य कारण है। गरीब बच्चों के पास जीवन की पर्याप्त सुविधाएं व आराम नहीं होते। उन्हें चोरी और लूटपाट इन सुविधाओं को जुटाने का सबसे सरल माध्यम लगता है। अतः छोटे बच्चे चोरी और डकैती करने लगते हैं। कभी–कभी गरीबी के कारण स्वयं माता–पिता ही अपने बच्चों को चोरी के लिये उकसाते हैं।

क्या बुरी संगत से भी कोई व्यक्ति अपराधी बन सकता है? हाँ, कई बार बच्चे या किशोर अपने समूह के नेताओं को प्रभावित करने के लिये चोरी, झूठ बोलना, खिड़कियों के काँच तोड़ना आदि गतिविधियाँ करते हैं। बाद में धीरे–धीरे यह उनकी आदत बन जाती है।

निम्न चार्ट बाल अपराध के कारणों का खुलासा करता है :–

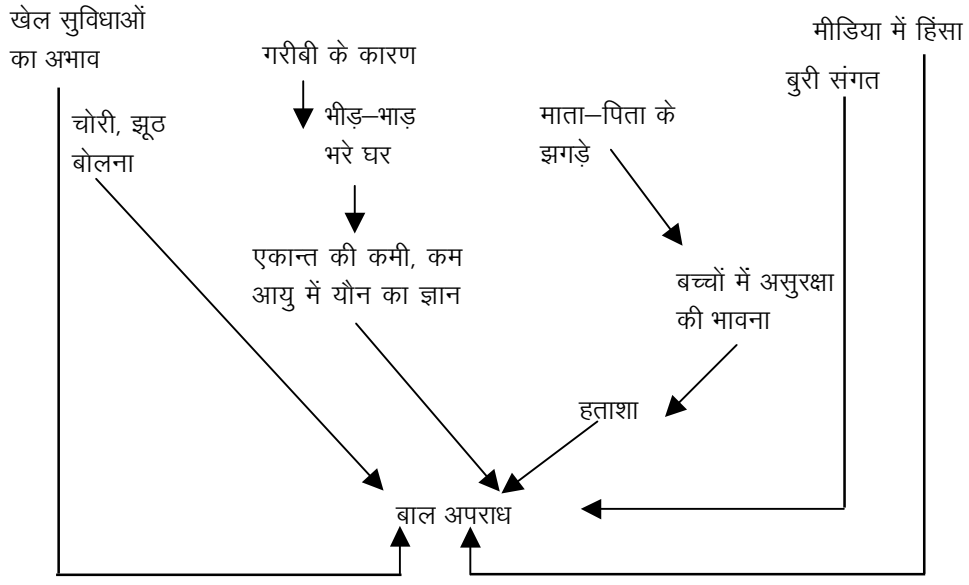

चित्र 21.3 बाल अपराध के कारण

टिप्पणी

क्या मीडिया में दिखाई जा रही हिंसा भी बाल अपराधों को बढ़ावा देती है? फिल्मों में व किताबों में बाल अपराधी को एक सशक्त पात्र के रूप में चित्रित किया जाता है। छोटे व किशोर बच्चे इन पात्रों से प्रभावित होकर उनके व्यवहार की नकल करना प्रारंभ कर देते हैं।

माता–पिता के बीच नियमित झगड़े भी इस समस्या का कारण होते हैं। जब माता–पिता बच्चों के सामने ऊँची आवाज में झगड़ते हैं, तब बच्चे इन लड़ाइयों से काफी डर जाते हैं। इन लड़ाइयों से बच्चों में असुरक्षा की भावना पैदा होती है।

21.2.2 उन्मूलन के तरीके

अपराधी प्रवृत्ति के बच्चे के साथ क्या होता है? लोगों की शिकायत पर ऐसे बच्चों को रिमांड होम में भेज दिया जाता है। रिमांड होम में क्या होता है? यहाँ बच्चों को उनकी अपराधी प्रवृत्ति को बदलने के अवसर दिये जाते हैं। उन्हें व्यावसायिक प्रशिक्षण उपलब्ध करवाकर उन्हें अपने पाँव पर खड़े होने का मौका दिया जाता है।

इन सुधार के तरीकों के अलावा भी हम कुछ कार्य कर सकते हैं जो इन समस्याओं को पैदा होने से ही रोक सकते हैं। वे तरीके क्या हैं?

गरीबी बाल अपराधों का मुख्य कारण है। क्या आप जानते हैं कि हमारे देश में गरीबी उन्मूलन के लिये कुछ कार्यक्रम चलते रहते हैं? हाँ, ऐसे कई कार्यक्रम हैं। ऐसी कुछ संस्थाओं का पता लगाइये, जहाँ कम ब्याज दरों पर किसी व्यवसाय के लिये ऋण उपलब्ध कराया जाता हो। इसके अतिरिक्त युवक/युवतियों को व्यावसायिक प्रशिक्षण भी कुछ संस्थाओं में दिया जाता है। क्या आपके आस–पास कोई स्वंयसेवी व्यावसायिक संस्था है? क्या आप वहाँ जाकर गरीब लोगों के लिये प्रशिक्षण की व्यवस्था कर सकते हैं?

माता–पिता को अपने बच्चों के साथ समय बिताना चाहिये। बच्चों की समस्याओं को सुनें और उनके मतभेदों को सुलझाएं। उनमें अच्छी आदतें व मूल्यों को विकसित करें। इस पाठ को पढ़ने के बाद आप माता–पिता के रूप में अपने बच्चों से किस प्रकार का व्यवहार करना चाहेंगे? युवाओं को मनोरंजन की सुविधाएं दें ताकि वे अपना समय भली–भाँति बिता सकें।

क्रियाकलाप 21.1 अपने चारों ओर देखें कि क्या कुछ बच्चों की अवहेलना हो रही है? क्या आप उनके लिये कुछ मनोरंजक क्रियाकलाप की व्यवस्था कर सकते हैं? बताएं ये उन्हें किस प्रकार मदद करेगा।

क्रम सं0	क्रियाकलाप नियोजित	किस प्रकार मदद करेगी

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 21.2

निम्न प्रश्नों का उत्तर दो पंक्तियों में लिखें।

1. बाल अपराधी कौन होते हैं?

.....

.....

2. कौन सा व्यवहार अपराध जन्य है?

.....

.....

3. कौन से कारक बाल अपराध को जन्म देते हैं?

.....

.....

4. यदि बाल अपराध गरीबी के कारण है तो बाल अपराधियों की सहायता किस प्रकार की जा सकती है?

.....

.....

21.3 बाल श्रम-कारण व परिणाम

अपने आस–पास देखकर बताएं कि छोटे बच्चे किन–किन कार्यों में संलग्न हैं? आप देखेंगे कि बच्चे अखबार बेचते हैं, ढाबों में काम करते हैं, कारे धोते हैं, जूते पॉलिश करते हैं और घरों में नौकर के रूप में कार्य करते हैं। क्या बच्चों का काम करना गलत है? हाँ, क्योंकि उनकी उम्र अभी काम करके पैसा कमाने की नहीं है। उन्हें स्कूल जाकर ज्ञानोपार्जन करना है। काम करने की लम्बी अवधि के कारण उनके विकास के अवसर अवरूद्ध हो जाते हैं।

क्या अब आप बाल श्रमिक को परिभाषित कर सकते हैं?

कोई भी बच्चा जो 14 वर्ष की आयु से कम हो और जो पैसा कमाने के लिये कार्य कर रहा हो, वह बाल श्रमिक है।

टिप्पणी

क्या आप बाल श्रम के कुछ कारणों के विषय में सोच सकते हैं? आइये उनकी सूची बनायें। ये हैं–

कारण	परिणाम
• गरीबी • निरक्षरता और माता–पिता का अज्ञान • अनाथ, आवारा व तिरस्कृत बच्चे • नाजुक उंगुलियां व तेज दृष्टि कुछ परम्परागत कौशलों में बहुत उपयोगी होती हैं, जैसे कालीन बुनाई में • ऐसे श्रमिकों की मांग जो सस्ते, मूक व निरीह हों।	• बच्चों से लम्बी अवधि (12 से 16 घंटे) तक असुविधाजनक आसन में काम कराया जाता है जिससे उनमें स्थायी विकलांगता हो सकती है। • वे अस्वच्छ स्थितियों में काम करते हैं और अक्सर संक्रामक रोग से ग्रस्त रहते हैं। • वे स्कूल नहीं जा पाते तो देश में अशिक्षितों की संख्या में वृद्धि होती है।

21.3.1 बाल श्रम की समस्याओं से निपटना

क्या आपको याद है कि हमने भाग 21.2.2 में गरीबी के उन्मूलन के क्या तरीके बताए थे? क्या उन्हीं विधियों को हम यहाँ भी अपना सकते हैं? हाँ उन विधियों को यहाँ भी अपना सकते हैं।

- अनौपचारिक शिक्षा की व्यवस्था करायें। मालिक बच्चों को काम से कुछ अवधि की छुट्टी देकर पढ़ने के लिये उत्साहित कर सकते हैं। मालिक स्वयं भी उनकी पढ़ाई–लिखाई की व्यवस्था कर सकते हैं।
- अभिभावकों को भी शिक्षित करें ताकि वे बाल श्रम के नकारात्मक पहलू को व बच्चों की शिक्षा के महत्त्व को समझ सकें।
- स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध करवाकर नियमित स्वास्थ्य जाँच शिविर की व्यवस्था कीजिए।
- बच्चों को स्वच्छ, हवादार व प्रकाशमय कमरों में वयस्कों की अपेक्षा कुछ ही घंटों तक काम करवाएं।

क्रियाकलाप 21.2: अपने आस–पास किसी बाल श्रमिक की पहचान करें व उसका प्रारूप बनायें। आप ऐसे बालक की क्या सहायता कर सकते हैं?

पाठगत प्रश्न 21.3

1. माता–पिता अपने बच्चों को काम पर क्यों भेजते हैं? 3 कारण बताएं।
   (a) ....

(b) .....

(c) .....

2. तीन परिस्थितियाँ, जिनमें बच्चों से काम करवाया जाता है, की सूची बनायें।

(a) .....

(b) .....

(c) .....

3. बाल श्रम से निपटने की तीन विधियों की सूची बनाएं।

(a) .....

(b) .....

(c) .....

21.4 सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़े बच्चे

निम्न कहानी पढ़ें :–

राधा एक दस वर्षीय बच्ची है। उसके माता–पिता दिहाड़ी पर काम करने वाले श्रमिक हैं। अपने घर में सबसे बड़ी होने के कारण, माता–पिता की अनुपस्थिति में वह अपने चार छोटे भाई–बहनों की देखभाल करती है। पूरा परिवार घोर गरीबी से जूझ रहा है। अपने कष्टों को भुलाने के लिये उसके पिता अक्सर शराब पीकर घर लौटते हैं व अपनी पत्नी से झगड़ता है। शुरू में राधा स्कूल जाती थी, परंतु बाद में फीस न दे पाने के कारण उसे स्कूल से हटा दिया गया।

राधा जैसे बच्चे **सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े बच्चे** कहलाते हैं। वे घोर गरीबी में जीते हैं। इन बच्चों को कम सुविधाएं प्राप्त हैं और उनके माता–पिता उनके शारीरिक, मानसिक, सामाजिक व संवेगात्मक विकास के लिये पर्याप्त सुविधाएं नहीं जुटा पाते।

21.4.1 सामाजिक व आर्थिक रूप पिछड़े बच्चों की सहायता

सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े बच्चों की सहायता हम कैसे कर सकते हैं? ऐसे बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिये क्या किया जाना चाहिये? यहाँ कुछ सुझाव दिये गये हैं।

- **शिक्षा का प्रलोभन** – उन्हें मुफ्त किताबों, कॉपी–पैंसिल, वर्दी, छात्रवृत्तियाँ और मध्यान्हकालीन भोजन आदि का प्रलोभन दीजिए। इससे उनके माता–पिता को उन्हें स्कूल भेजने का प्रोत्साहन मिलेगा। कई स्कूलों में ऐसा कार्य प्रारंभ हो भी चुका है।

टिप्पणी

- **व्यावसायिक शिक्षा**– शिक्षा के साथ–साथ उन्हें व्यवसायिक प्रशिक्षण भी दिया जाना चाहिये ताकि स्कूल की शिक्षा पूरी करने के बाद वे कोई व्यवसाय अपना सकें। इससे उनमें आत्मविश्वास जगेगा और वे विभिन्न स्थितियों का सामना अच्छी प्रकार कर सकेंगे।

आप ऐसे ही अन्य मुद्दों के विषय में http//freethechildren.org पर लॉग ऑन कर सकते हैं।

क्रियाकलाप 21.3 - ऐसे बच्चों के विषय में पढ़ने के बाद अपने आस–पास भी ऐसे बच्चों को देखें और विचार करें कि आप उन्हें किस प्रकार की सेवाएं दे सकते हैं। क्या आप उन्हें अपने खाली समय में पढ़ा सकते हैं? यदि हाँ, तो आगे बढ़कर इस काम को शीघ्र प्रारंभ करें।

पाठगत प्रश्न 21.4

1. एक बच्चों के क्लब ने विचार किया कि उस समूह के सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़े बच्चों की किस प्रकार मदद की जाय। उन्होंने सुझाव लिखते समय कुछ गलतियां की। शब्दों को सही प्रकार व्यवस्थित करके देखें कि आप ऐसे बच्चों के लिये क्या कर सकते हैं।

   1. ऐसे बच्चों को कपढ़ार.....
   2. पुराने नेखिलौ नदा करें.....
   3. दान करें पुरानी बेंताकि.....
   4. कोई लकौश सिखाकर.....
   5. व्यक्तिगत ताच्छस्व सिखाकर.....
   6. कक्षिशै खेल का आयोजन करके.....
   7. कषपो नाश्ता देकर.....
   8. लास्तकह मेला आयोजित करके.....
   9. कतिनै शिक्षा सिखाकर.....
   10. उन्हें यलद्याावि जाने के लिये प्रोत्साहित करके.....

21.5 शारीरिक विकलांगता

बचपन से ही रानी चल नहीं सकती क्योंकि उसे पोलियो हो चुका है। 5 वर्षीय नईम अपने सिर पर नियन्त्रण नहीं रख पाता। सुबोध अन्धे होने के कारण पिंकी की कहानी

की किताब नहीं पढ़ सकता। टोनी न तो बोल सकता है और न सुन सकता है परंतु वह अपनी माँ के इशारे से बात समझ सकता है।

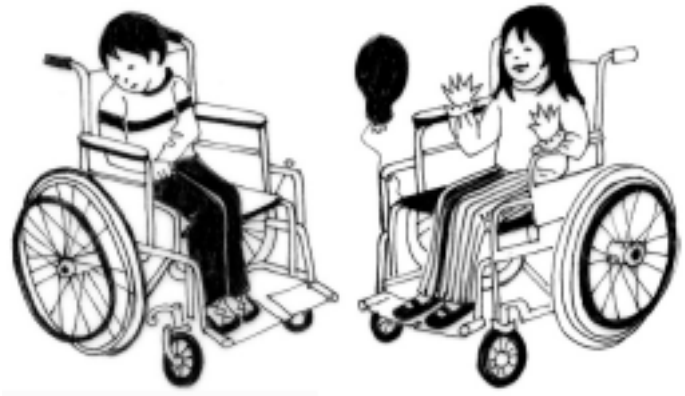

चित्र 21.4: बच्चों में शरीरिक विकलांगता

इस सब बच्चों के साथ क्या परेशानी है, ये बच्चे वैसे काम नहीं कर पाते जेसे आप और हम कर सकते हैं। ऐसे बच्चे शारीरिक रूप से विकलांग बच्चे कहलाते हैं।

विकलांग बच्चे उन क्रियाकलापों को नहीं कर पाते जो मानव के लिये साधारण समझे जाते हैं।

क्या आप बच्चों में पाई जाने वाली कुछ शारीरिक विकलांगताओं की सूची बना सकते हैं?

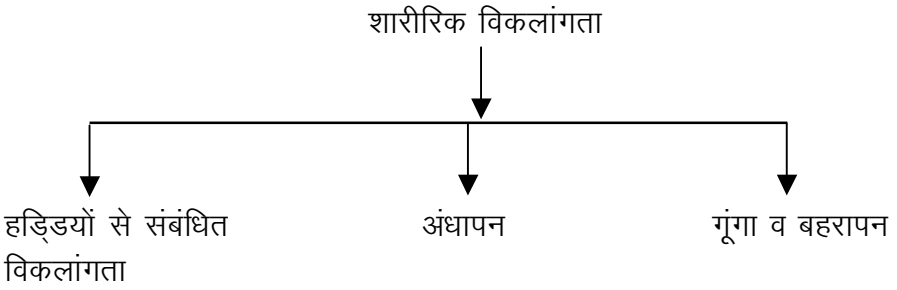

चित्र 21.5

क्या आपने उन बच्चों को देखा है जो अपने हाथ, पैर व शरीर के अन्य हिस्सों का उपयोग नहीं कर पाते? ऐसे बच्चे शारीरिक रूप से विकलांग कहलाते हैं। हड्डियों की कमजोरी के मुख्य कारण है हड्डियों की दोषपूर्ण बनावट, कैल्शियम व विटामिन D की कमी या फिर दुर्घटनावश हड्डियों को पहुँची क्षति। आपने नृत्यांगना सुधा चंद्रन के विषय में सुना होगा जिसकी दोनों टांगे 1981 में एक दुर्घटना के बाद काटनी पड़ी थीं। साहसी सुधा ने हिम्मत नहीं हारी और कृत्रिम पांव के सहारे वह वापस नृत्य करने लगी। वह लगातार दृढ़ इच्छा शक्ति व साहस का सुंदर उदाहरण है। उसने अपनी विकलांगता पर 'जयपुर फुट' के आधार पर विजय प्राप्त की और भारत की एक सुप्रसिद्ध नृत्यांगना बनी। याद रखें, हमारे बीच ऐसी कई सुधा हैं। उन्हें हमारे सहारे व प्रोत्साहन की आवश्यकता है।

टिप्पणी

कुछ बच्चों की मांसपेशियां अकड़ी होती हैं। ऐसे बच्चे स्पास्टिक बच्चे कहलाते हैं। इन बच्चों को गत्यात्मक और शारीरिक संतुलन में समस्या होती है। अक्सर उनके हाथ, सिर व पैर दोषपूर्ण व धीरे चलते हैं। ऐसे बच्चों के शरीर में अकड़न अलग–अलग मात्रा में होती है।

क्या आपने अपने आस–पास नेत्रहीन या आंशिक रूप से अंधे बच्चों को देखा है? उनकी समस्या क्या होती है? आंशिक रूप से अंधे बच्चों की दृष्टि धुंधली होती है व नेत्रहीन बच्चे बिल्कुल भी देख नहीं पाते। कई बच्चे स्पष्ट रूप से नहीं देख पाते। बच्चे के दृष्टि संबंधी दोष पर हम तब ध्यान देते हैं जब वे सुई में धागा डालने, बस का नम्बर पढ़ने में या फिर श्याम पटल से पढ़ने में दिक्कत की शिकायत करते हैं। ऐसे बच्चे चश्मे की सहायता से बेहतर देख सकते हैं। हिन्दी साहित्य में सूरदास के योगदान को कौन भूल सकता है, जिन्होंने अपने अंधेपन के बावजूद अपनी रचनात्मकता को प्रभावित नहीं होने दिया।

क्या आप जानते हैं, कि कुछ ही बच्चे जन्म से अंधे होते हैं। अधिकांशतः बाद में अंधे होते हैं। दैनिक भोजन में विटामिन 'A' की कमी व आँखों की चोट अंधेपन के मुख्य कारण हैं।

कुछ बच्चे गूंगे व बहरे होते हैं। इन बच्चों के माता–पिता कैसे पहचानते हैं कि उनका बच्चा बहरा है? अक्सर माता–पिता जल्दी ही समझ जाते हैं कि उनका बच्चा तेज आवाजों पर प्रतिक्रिया नहीं कर रहा है। जन्म से बहरे बच्चों को भाषा सीखने में कठिनाई होती है। क्या आप इसका कारण बता सकते हैं? ऐसा इसलिये होता है कि ऐसे बच्चे न तो स्वयं की आवाज सुनते हैं और न अपने माता–पिता की। अतः भाषा का उनके लिये कोई अर्थ नहीं होता। तेज शोर, कान का संक्रमण, कानों को पिन/क्रेयॉन आदि से कुरेदने के कारण बहरापन हो जाता है। इस प्रकार के दोषों को श्रवण सहायक यंत्रों द्वारा ठीक किया जा सकता है।

21.5.1 विकलांग बच्चों की मदद कैसे करें?

आपके प्रेम, सहायता और प्रोत्साहन से शारीरिक रूप से विकलांग बच्चे जल्दी ही अन्य बच्चों जैसे ही कौशल विकसित कर लेते हैं। ऐसे बच्चों की सहायता के कुछ तरीके यहाँ दिये जा रहे हैं।

1. जितनी जल्दी हो सके बच्चे का स्वास्थ्य परीक्षण करवायें ताकि उनकी विकलांगता आंकी जा सके। ऐसा क्यों आवश्यक है? क्योंकि जितनी जल्दी विकलांगता का पता चलता है उतनी ही उन दोषों को दूर करने की संभावना होती है।
2. जैसे ही विकलांगता का पता चल जाय वैसे ही बच्चे को इसके साथ जीना सिखायें। ऐसे बच्चों के लिए विशेष स्कूल की व्यवस्था अच्छी रहती है। इन स्कूलों में बच्चों को उनकी विकलांगता का सामना करने के लिये कुछ विशेष विधियां व सहायता सामग्री होती है। एक अंधा बच्चा किस प्रकार लिखना और पढ़ना

सीखता है? हाँ, ब्रेल की सहायता से। ब्रेल उभरे हुये बिंदुओं की व्यवस्था है जो वर्णमाला का प्रतिनिधित्व करते हैं और इन अक्षरों को अंगुलियों के पोरों की सहायता से पढ़ा जाता है। इसी प्रकार बहरे बच्चे होठों को पढ़ना सीख जाते हैं और संकेत भाषा का उपयोग करते हैं।

3. विकलांग बच्चों को कृत्रिम उपादानों का प्रयोग करना सीखना चाहिये। क्या आप ऐसे किसी उपादान का नाम बता सकते हैं? ये है ब्रेसेज, कृत्रिम पांव, आदि। आप इन्हें कहाँ से प्राप्त कर सकते हैं? सरकारी अस्पतालों में ये या तो मुफ्त या फिर काफी सस्ते दामों पर मिलते हैं।
4. जैसे ही बच्चा अपनी विकलांगता का सामना करना सीख जाय, उसे साधारण बच्चों के साथ घुलने मिलने दीजिये।
5. अंधे बच्चे को उसकी शेष दृष्टि या अन्य इन्द्रियों का भरपूर प्रयोग करने के लिये प्रोत्साहित करें। आप एक चार वर्षीय विकलांग बच्चे को आकारों के विषय में किस प्रकार बताऐंगे? हाँ, स्पर्श करके।
6. अंधे बच्चे को चलते समय छड़ी का प्रयोग करना सिखाएँ। उनको इसकी क्यों जरूरत पड़ती है? इससे उन्हें रास्ता ढूंढने में सहायता मिलती है और उनमें आत्मविश्वास जागृत होता है।
7. आंशिक रूप से बहरे बच्चे को श्रवण सहायक यंत्र का उपयोग करने को प्रोत्साहित करें।
8. बच्चे को बोलने व होंठ पढ़ने की कला सीखने के लिये प्रोत्साहित कीजिये। होंठ पढ़ना बच्चों के लिये क्यों महत्वपूर्ण है? उन्हें होठों के व चेहरे के भावों पर अपना ध्यान लगाकर भाषा का प्रयोग करने दीजिए।

क्या आप जानते हैं कि शिक्षा समाप्त होने के बाद विकलांग लोगों को साधारण लोगों की तरह नौकरी मिल सकती है? विकलांग लोगों को आपकी सहानुभूति की नहीं बल्कि अपनी क्षमताओं को जानने के लिये आपके सहारे की आवश्यकता है। क्या आप उन्हें सहारा दे सकते हैं? आप व्यक्ति की विकलांगता के अनुरूप कुछ विशिष्ट सुविधाएं उपलब्ध करवा सकते हैं।

क्रियाकलाप :- विशिष्ट जरूरतों वाले किसी बच्चे की पहचान कर उसके आत्मविश्वास को बढ़ाने के उसके परिवार के प्रयत्नों का अध्ययन कीजिये।

पाठगत प्रश्न 21.5

1. हड्डियों से कमजोर विकलांग बच्चे वह हैं जिन्हें समस्या है –
   (a) बोलने में
   (b) देखने में

(c) सुनने में

(d) चलने–फिरने में

2. एक नेत्रहीन बच्चे को आकार की पहचान कराने का सबसे अच्छा तरीका है –

(a) चित्र बनाकर

(b) मौखिक वर्णन करके

(c) आकार को छू कर

(d) मौखिक वर्णन और स्पर्श करके

3. जन्म से बहरे बच्चों को बोलने में कठिनाई होती है क्योंकि –

(a) अपने माता–पिता की आवाज सुनकर वे चौंक जाते हैं

(b) वे अपनी ही आवाज नहीं सुन पाते

(c) वे बोलने की अपेक्षा सुनना पसंद करते हैं

(d) वे कोई आवाज नहीं सुन पाते

4. क्षीण श्रवण शक्ति वाले बच्चों को –

(a) अपने कान साफ करवाने चाहिये

(b) श्रवण सहायक यंत्र लगाने चाहिये

(c) सुनने का अभ्यास करना चाहिये

(d) सुनने पर अपना ध्यान केन्द्रित करना चाहिये

5. विकलांग बच्चे के पुनर्वास के लिये महत्त्वपूर्ण है कि उन्हें –

(a) प्रेम व स्नेह दिया जाए

(b) उन्हें शीघ्र से शीघ्र स्वास्थ्य सहायता दी जाए

(c) उनके साथ समय व्यतीत किया जाए

(d) उपर्लिखित सभी उपाय किये जाए

21.6 मानसिक विकलांगता क्या है?

मानसिक विकलांगता बच्चे के मानसिक विकास में विलम्ब या धीमी गति है। जो बच्चा मानसिक रूप से कमजोर है, वह अपनी उम्र के अन्य बच्चों की अपेक्षा धीमी गति से सीखता है। ऐसे बच्चों में विकास के मील के पत्थर देरी से प्राप्त होते हैं। क्या आप इसका एक उदाहरण दे सकते हैं? हाँ, बच्चा चलना व बोलना देर से सीखता है। इसका क्या कारण हो सकता है? इसका

चित्र 21.5

कारण है मानसिक अवरूद्धता अर्थात रोगों के कारण मस्तिष्क का विकास रूक जाता है। उदाहरण के लिये मस्तिष्क में ऑक्सीजन की कमी या प्रसव के समय प्रयोग किये औजारों से मस्तिष्क में लगने वाली चोट या किसी दुर्घटना से मस्तिष्क को लगी चोट आदि। मंदबुद्धिता इस बात पर निर्भर करती है कि मस्तिष्क को किस सीमा तक क्षति पहुंची है।

26.6.1 मंदबुद्धि बच्चों की सहायता

आप सोच रहे होंगे कि मंदबुद्धि बच्चों की सहायता के लिये क्या किया जा सकता है? सभी मंदबुद्धि बच्चों को कुछ स्वयं सहायता कौशल कुछ सीमा तक सिखाये जा सकते हैं। कुछ बच्चों को पढ़ना व लिखना भी सिखाया जा सकता है जबकि कुछ को अपनी देखभाल के लिये भी किसी न किसी की आवश्यकता पड़ती है। आप इन बच्चों को उनकी अधिकाधिक क्षमता के विकास में किस प्रकार सहायता कर सकते हैं? नीचे ऐसे ही कुछ दिशा निर्देश दिये जा रहे हैं।

– ऐसे बच्चों को कभी भी मूर्ख या बेवकूफ न कहें। इससे ये बच्चे भी उतने ही व्यथित होते हैं जितने आप।

– जो कुछ भी ये बच्चे स्वयं कर सकें, उतना कार्य इन्हें करने दें। जब वे आपकी मदद मांगें तभी उनकी मदद करें। धीरे–धीरे बच्चों को कपड़े पहनना व उतारना, ठीक से खाना, अन्य लोगों से चीजें मिल बांटना और कुछ सरल निर्देश मानना सिखायें।

– यदि मंदबुद्धिता अत्यधिक नहीं है तब बच्चों को साधारण घरेलू कार्य सिखायें जैसे घर की देखभाल, खाना पकाना जैसे चावल पकाना, चाय बनाना, आलू उबालना आदि। इससे न केवल वे व्यस्त रहेंगे बल्कि वे आत्मनिर्भर भी बनेंगे।

– मंदबुद्धि बच्चों को विशेष स्कूलों में ही डालें जहाँ उन्हें जीविकोपार्जन के लिये कुछ व्यवसायिक प्रशिक्षण दिया जाता है।

अधिक सूचना के लिये कृपया http:/www.disability india.org को लॉग ऑन करें।

पाठगत प्रश्न 21.6

गलत उत्तरों को चुनें (एक से अधिक भी हो सकते हैं) –

(1) मंदबुद्धिता देरी है, निम्न में –

(a) चलने में

(b) बोलने में

(c) मानसिक विकास में

(d) खाना खाने की आदत के विकास में

टिप्पणी

(2) मंदबुद्धिता का कारण है –

(a) मस्तिष्क की चोट,

(b) मस्तिष्क को प्रभावित करने वाले रोग,

(c) लम्बी बीमारी,

(d) पुरानी खांसी व जुकाम से,

(e) हृदय को कम ऑक्सीजन मिलना

(3) मंदबुद्धि बच्चों के सिखाया जा सकता है

(a) अपनी देखभाल करना,

(b) घर के कार्यों में सहायता कना,

(c) खाना पकाना,

(d) कुछ व्यवसायिक कौशल।

21.7 जनेन्द्रिय संक्रमण

(i) प्रजनन तंत्र संक्रमण क्या है?

कभी–कभी प्रजनन अंगों के आस–पास के क्षेत्र में सूक्ष्म जीवाणुओं द्वारा संक्रमण हो जाता है। संभोग के दौरान ये जीवाणु एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक पहुँच सकते हैं और इस प्रकार प्रजनन तंत्र संक्रमण फैलता है।

(ii) जनेन्द्रिय संक्रमण क्या हैं?

जो संक्रमण सेक्स द्वारा फैलते हैं वे जनेन्द्रिय संक्रमण कहलाते हैं।

सिफलिस तथा गोनोर्हिया इस प्रकार के संक्रमण हैं। संक्रमण बैक्टीरिया द्वारा होता है और संक्रमित व्यक्ति से यौन संबंध द्वारा होता है। संक्रमण के लक्षण 2–5 दिन में (गोनोर्हिया) और 10–90 दिन में (सिफिलिस) दिखाई पड़ते हैं।

लक्षण:

– बुखार और घाव हो जाते हैं– त्वचा पर, गले में तथा गुप्तांगों में विशेषकर प्रजनन अंगों, मल द्वार तथा मूंह में।

– हाथ–पैर तथा हथेलियों पर दाने

– मुँह में सफेद दाग

– गुप्तांगों के पास मस्से

– संक्रमित भागों से बाल झड़ना

रोकथाम तथा उपचार

– व्यक्ति विशेष के साथ ही लैंगिक संपर्क स्थापित करें

– समलैंगिक संबंध या वैश्यावृत्ति से दूर रहें

– उपयुक्त चिकित्सीय उपचार करें

(iii) एड्स (AIDS) क्या है?

एड्स (AIDS) का पूरा अर्थ है एक्वायर्ड इम्यूनो डिफिशियेन्सी सिन्ड्रोम। ऐसा इसलिये कहा जाता है –

एक्वायर्ड	:–	क्योंकि यह आनुवांशिक नहीं है। यह रोग दूसरों से लगता है।
इम्यूनो डेफिशियन्सी	:–	इसस शरीर की रोग प्रतिरोधक प्रणाली यानी शरीर की रोगों के जीवाणुओं से लड़ने की शक्ति पहले कमजोर होती है और अंततः नष्ट हो जाती है।
सिन्ड्रोम	:–	यह केवल एक रोग या उसके लक्षण नहीं है बल्कि कई रोगों का एक समूह है।

एड्स, एचआईवी (HIV) नामक वाइरस के कारण उत्पन्न स्थिति है, जिससे शरीर की रोग प्रतिरोधी क्षमता को क्षति पहुंचती है। किसी एक शारीरिक लक्षण से एड्स की पहचान नहीं हो पाती। एड्स के सभी लक्षण अन्य बीमारियों के लक्षण भी हो सकते हैं। केवल उचित परीक्षणों से ही एचआईवी संक्रमण की पहचान संभव है।

(iv) एचआईवी (HIV) क्या है?

जो विषाणु एड्स का कारण बनता है उसका नाम एचआईवी है, जो हूयमन इम्यूनो डेफिशियेन्सी वाइरस का संक्षिप्त रूप है। रोगी के शरीर के अंदर मौजूद विषाणु से शरीर की रोग प्रतिरोधी क्षमता कमजोर होती जाती है और व्यक्ति बीमारियों का शिकार बन जाता है।

वर्तमान में एचआईवी के दो विषाणु हैं (एचआईवी 1 व एचआईवी 2) जो एड्स पैदा करते हैं। एच.आई.वी. रेट्रोवाइरसों की श्रेणी का एक वाइरस है। यह अत्यन्त सूक्ष्म होता है– बाल के हजारवें हिस्से से भी छोटा। यह सेही या सूर्यमुखी के खिले फूल जैसा दिखता है।

एचआईवी/एड्स और रोग प्रतिरोधी क्षमता

रोग प्रतिरोधी क्षमता का अर्थ है, शरीर का संक्रमण व रोगों से अपना बचाव। त्वचा शरीर का बाह्य रक्षा तंत्र है जबकि सफेद रक्त कणिकाएं (WBC) शरीर की रक्षा प्रणाली के क्रियान्वन के लिये महत्त्वपूर्ण हैं।

टिप्पणी

जब व्यक्ति एचआईवी से संक्रमित हो जाता है तब शरीर अपनी रक्षा के लिये एचआईवी के लिये प्रतिपिंड (एन्डी बॉडीज) उत्पन्न करता है। वे वह तत्त्व हैं जो शरीर की वाइरस व वैक्टीरिया द्वारा उत्पन्न संक्रमण से रक्षा करते हैं। परंतु ये इन प्रतिपिंडों में एचआईवी विषाणु का सामना करने के लिये पर्याप्त शक्ति नहीं होती है। एचआईवी, रक्त की सफेद रक्त कणिकाओं के अनुवांशिक भाग को संबद्ध कर लेता है। कोशिका के इस अनुवांशिक भाग से चिपक कर वाइरस प्रजनन करता है। जब वाइरस कोशिका में प्रवेश कर उसका भाग बन जाता है तब बिना कोशिकाओं को नष्ट किये इस विषाणु को खत्म करना दुष्कर कार्य है। वाइरस को खत्म करने का अर्थ है कोशिकाओं को खत्म करना और शरीर की रोग प्रतिरोधी क्षमता को और अधिक कमजोर करना।

21.7.1 एड्स के लक्षण

एचआईवी से संक्रमित व्यक्ति के लक्षण किसी भी अन्य बीमारी के लक्षण भी हो सकते हैं। कोई व्यक्ति एचआईवी से संक्रमित है या नहीं, इसका पता केवल खून की जाँच से ही लगाया जा सकता है। जाँच में एचआईवी पाये जाने मात्र से व्यक्ति एड्स रोगी नहीं होता बल्कि आगे चलकर कुछ समय बाद वह अवश्य एड्स का पूर्ण रोगी हो जाता है।

एचआईवी से पीड़ित व्यक्ति में निम्न में से एक या अधिक लक्षण हो सकते हैं।

- निरन्तर थकान
- अत्यधिक वजन घटना (शरीर के वजन का 10% वजन घट जाता है)
- सोते–सोते पसीना आना
- लम्बी अवधि तक बुखार
- लगातार दस्त, कभी–कभी महीने भर

एचआईवी से संक्रमित कई व्यक्तियों में रोग के लक्षण दिखाई नहीं देते हैं परंतु पूर्णरूपेण एड्स उन्हें आने वाले वर्षों में हो सकता है। यह अवधि लक्षणहीन अवधि कहलाती है और यह 10 वर्ष से भी अधिक चल सकती है। परंतु चूंकि उनके खून में एचआईवी होता है अतः वे अन्य लोगों को संक्रमित करने में सक्षम होते हैं।

एड्स रोगी के आम लक्षण

- सूजी हुयी गलग्रंथियां जो साधारणतया बगल में, गर्दन में व जांघों के आस–पास होती हैं
- मुंह के अंदर, गले व जीभ पर सफेद चकत्ते होना जो फफूंदी के संक्रमण से होते हैं
- त्वचा के ऊपर या नीचे लाल, भूरे या गुलाबी चकत्ते, मुंह के अंदर या आँखों की पलकों पर चकत्ते
- क्षय रोग (टी.बी.)

व्यक्ति के शरीर को संक्रमण के पश्चात एचआईवी के प्रतिपिंड उत्पन्न करने में 2 सप्ताह से 3 महीने का समय लगता है। यह समय व्यक्तिगत भिन्नताओं पर निर्भर करता है। यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि रक्त में वायरस कितनी तादाद में उपस्थित है, व्यक्तिगत रोग प्रतिरोधी क्षमता कितनी है, बार–बार संक्रमण की संभावना तथा व्यक्ति की मनास्थिति जैसे चिंता व अवसाद आदि। अन्य स्वास्थ्यगत खतरे जैसे धूम्रपान, थकान, कुपोषण या अत्यधिक मदिरापन की आदत आदि के कारण एड्स अधिक जल्दी विकसित होता है।

एचआईवी परीक्षण

एचआईवी प्रतिपिंड संक्रमण के पहले तीन महीने में विकसित होते हैं। अतः तीन महीने के पश्चात रक्त परीक्षण द्वारा एचआईवी परीक्षण करना संभव होता है। कभी–कभी प्रतिपिंड विकसित होने में छः महीने का समय भी लग सकता है परंतु बहुत कम लोगों में। अतः यदि तीन महीने बाद परीक्षण नकारात्मक आता है तब पुनः एक बार छः महीने बाद परीक्षण करना ठीक रहता है।

21.7.2 एचआईवी संक्रमण के माध्यम

एच.आई.वी. रक्त, वीर्य, योनि स्राव द्वारा और माँ द्वारा बच्चे को होता है।

रक्त द्वारा संक्रमण

चूँकि यह विषाणु रक्त में रहता है, अतः यह रक्त द्वारा या रक्त उत्पादों द्वारा फैलता है। एचआईवी फैलता है सुइयों के इस्तमाल से, सिरिंज से, ब्लेड व चाकू से, शल्य चिकित्सा के औजारों से, आदि। यदि ये संक्रमित उपकरण बिना जीवाणु रहित किये हुये स्वस्थ व्यक्ति पर प्रयोग किये जायें, तब उसमें भी संक्रमण हो सकता है। अनुचित ढंग से जीवाणु रहित किये गये उपकरण अधिकतर नाम गुदवाने के लिये, एक्यूपंक्चर के लिये, कान छेदने के लिये या परम्परागत उपचार के तरीकों के लिये प्रयोग किये जाते हैं और ये एचआईवी संक्रमण का कारण बनते हैं।

शिराओं द्वारा नशीली दवाओं का सेवन करने वालों के लिये सबसे ज्यादा खतरा होता है क्योंकि उनके द्वारा उपयुक्त सुइयां बिरले ही जीवाणु रहित की जाती हैं।

संक्रमित माँ द्वारा बच्चे में संक्रमण

एचआईवी संक्रमित गर्भवती स्त्री द्वारा बच्चे में संक्रमण जन्म से पहले या बाद में हो सकता है। जन्म से पहले संक्रमण जरा नाल या प्लेसेंटा द्वारा और जन्म के समय माँ के रक्त द्वारा या स्तनपान द्वारा हो सकता है। एचआईवी संक्रमण के बच्चे में होने की संभावना 30% प्रतिशत तक होती है।

यौन संबधों द्वारा संक्रमण

एचआईवी संक्रमण का सबसे सरल माध्यम है संक्रमित व्यक्ति से असुरक्षित (बिना

टिप्पणी

कंडोम के प्रयोग के) यौन संबध बनाना। यद्यपि प्रति संबंध रोग होने की संभावना केवल 0.1% से 1% है फिर भी विश्व में 80 से 90 प्रतिशत एड्स के संक्रमण का कारण यही माध्यम है। एचआईवी विषाणु संक्रमित व्यक्ति के वीर्य व योनि स्राव में उपस्थित रहता है। इसी कारण एचआईवी को भी जनेन्द्रिय संक्रमणों की श्रेणी में रखा गया है। अन्य जनेन्द्रिय संक्रमण की उपस्थिति से एचआईवी संक्रमण होने की संभावना बढ़ जाती है। अतः इस माध्यम से एचआईवी के संक्रमण को सुरक्षित यौन संबंधों को अपनाने से पूर्णतया नकारा जा सकता है।

21.7.3 एचआईवी संक्रमण से संबंधित भ्रांतियाँ

एचआईवी संक्रमण से जुड़ी कुछ भ्रांतियां प्रचलित हैं। हम सब को जान लेना चाहिये कि एचआईवी साधारणतया निम्न द्वारा **नहीं फैलता**–

- हाथ पकड़ने, स्पर्श करने व हाथ मिलाने से
- भीड़–भाड़ वाले स्थानों में शारीरिक स्पर्श से
- खाने–पीने के बर्तनों और झूठे प्याले व तश्तरियों के प्रयोग से
- एक ही स्थान पर काम करने से
- एक ही स्थान पर खेलने से
- साथ–साथ खाने व एक दूसरे के वस्त्र पहनने से
- चुम्बन और आलिंगन द्वारा
- एक ही कमरे में सोने से
- एक ही शौचालय या बाथरूम के प्रयोग या तरणताल में साथ तैरने से
- एक साथ हसंने व मुस्कराने से।

अधिक जानकारी के लिये
http://www.aidsindia.org
को लॉग ऑन करिये।

- एड्स के प्रतीक को पहचानिये। उसका चित्र बनाइये, रंगिये व अपनी अभ्यास पुस्तिका में चिपकाइये।

क्रियाकलाप 21.5 अपने आस–पास विज्ञापन, बैनर आदि का अवलोकन कीजिए और एड्स/एचआईवी से संबंद्ध जानकारी हासिल कर अपनी नोट बुक में लिखिए।

21.8 सुरक्षित मातृत्व

साधारणतया यह माना जाता है कि मातृत्व शिशु के जन्म से प्रारंभ होता है। पर यदि आप जरा सोचें तो पायेंगे कि मातृतव गर्भ ठहरने से ही प्रारंभ हो जाता है क्योंकि स्त्री अपने भ्रुण का निरंतर भरण–पोषण करती

चित्र 21.6

टिप्पणी

है। यह वह समय है जब स्त्री को सबसे ज्यादा स्वस्थ व खुश रहना चाहिए जिससे वह एक स्वस्थ बच्चे को जन्म दे सके।

सुरिक्षत मातृत्व एक विश्वव्यापी प्रयास है जिससे गर्भावस्था में स्त्री का बीमार होना तथा जनन के दौरान माँ की मृत्यु की दरों को कम किया जा सके। क्या आप जानते हैं कि विश्व में हमारा देश उन दशों में आता है जहाँ सर्वाधिक माताएं बच्चों को जन्म देते समय मर जाती हैं? अमेरिका में यदि 4000 महिलाएं गर्भवती हों, तब उनमें से केवल एक की मृत्यु हो सकती है जबकि भारत में प्रति 132 गर्भवती महिलाओं में से एक की मृत्यु होती है। कम आयु की महिला होना ऐसा अनचाही मृत्यु का कारण हो सकता है। 14 से 45 वर्ष की आयु की महिलाएं गर्भधारण कर सकती हैं। गर्भधारण करना एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। गर्भधारण व जनन सदैव इतना प्राकृतिक व सरल नहीं होता जितना अपेक्षित होता है। विश्व में करीब 60,00,000 तथा भारत में प्रतिवर्ष 1,00,000 महिलाएं प्रतिवर्ष गर्भधारण या बच्चों को जन्म देने की समस्याओं से मरती हैं। इससे भी कई अधिक संख्या में महिलाओं को किसी प्रकार की स्वास्थ्यजनक स्थाई क्षति पहुँचती है। सुरक्षित मातृत्व हमें माँ व नवजात शिशुओं की मृत्युदर घटाने के तरीके सिखाता है।

महिलाओं को सुरक्षित मातृत्व के लिये निम्न की जानकारी होना आवश्यक है:

(i) अल्पआयु में या देर से गर्भधारण से बचें:– 18 वर्ष से पूर्व तथा 35–37 वर्ष की आयु के बाद गर्भधारण से जच्चा तथा बच्चा दोनों के लिए असुरक्षित हो सकता है।

(ii) परिवार नियोजित करें– अर्थात गर्भधारण के मध्य कम से कम दो वर्ष का अंतर होना आवश्यक है जिससे जच्चा का शरीर पुनः स्वस्थ हो सके। इस बीच बच्चे की भी भली–भांति देख–रेख हो जाती है। परिवार को नियोजित करने का अर्थ यह भी होता है कि परिवार में बच्चों की कुल संख्या को दो या तीन तक ही सीमित रखा जाए।

निम्न में से किसी भी तरीके को अपना कर परिवार को नियोजित किया जा सकता है।

- **प्राकृतिक तरीका**

  यह बहुत सुरक्षित तरीका नहीं है और अनचाहा गर्भ भी ठहर सकता है। आप अपने पास के स्वास्थ्य केन्द्र के डाक्टर की सलाह से 'सुरक्षित अवधि' का पता लगा सकते हैं।

- **यांत्रिक तरीके**

  पुरुषों द्वारा प्रयुक्त–कंडोम (रबड़ की एक पतली झिल्ली) का प्रयोग शुक्राणु तथा डिंब को मिलने से रोकता है। कंडोम पास के किसी भी दवाई की दुकान पर आसानी से उपलब्ध होते हैं।

टिप्पणी

महिलाओं द्वारा प्रयुक्त – डाक्टर द्वारा आई.यू.डी. को महिला के शरीर में लगा दिया जाता है कि जिससे गर्भधारण नहीं होता है। आई.यू.डी. को कॉपर टी के नाम से भी जाना जाता है।

गर्भनिरोधक गोलियाँ– ये डाक्टरी सलाह के बाद महिला द्वारा ली जाती हैं। गोली लेने से डिंबोत्सर्ग अवरुद्ध होता है और निशेचन नहीं हो पाता है।

- **शल्य चिकित्सा द्वारा** – ये वंध्यीकरण के तरीके हैं तथा स्थाई होते हैं। पुरुषों में नसबन्दी की जाती है जिसमें शुक्र वाहक को काट कर दोनों सिरे बांध दिए जाते हैं। महिलाओं की नसबन्दी में डिंबवाहिनी को काट कर यही प्रक्रिया की जाती है।

(iii) गर्भावस्था में देखभाल– यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि स्त्री की गर्भावस्था तथा प्रसव के समय उचित देखभाल की जाए।

सुरक्षित मातृत्व के लिए निम्न सावधानियाँ बरती जानी चाहिए।

- गर्भ के दौरान व प्रसव के समय की तैयारियों के संबंध में किसी योग्य व कुशल डॉक्टर व नर्स से परामर्श लें।
- प्रसव के समय किसी कुशल व्यक्ति का सामान्य प्रसव के लिये उपस्थित रहना आवश्यक है। इस अनुभवी व्यक्ति को मालूम होना चाहिये कि कब महिला को खून आदि चढ़ाने के लिये अस्पताल भेजा जाना चाहिये।
- नवजात शिशु को स्वच्छ रखा जाना चाहिये। जरा नाल का बांधकर काटा जाना चाहिये ताकि वह जीवाणु रहित रहे और इसमें बैक्टीरिया प्रेवश न कर सकें।

अधिक जानकारी के लिये http;//www.safemotherhood को लॉग ऑन करें।

- स्तनपान जल्द से जल्द प्रारंभ करवा देना चाहिए क्योंकि माँ का प्रारंभिक दूध बच्चे को रोग प्रतिरोधात्मक क्षमता प्रदान करता है। अपर्याप्त ढंग से साफ की गई दूध की बोतल से बच्चे को दस्त व अन्य संक्रमण हो सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 21.7

1. निम्न में से उन कारकों को क्रास (X) करके काट दीजिये जो एचआईवी संक्रमण का माध्यम नहीं हैं।

   (i) रक्त, वीर्य और योनि स्राव

   (ii) संक्रमित व्यक्ति से हाथ मिलाना

   (iii) चीरा लगाने व कान छेद के लिये प्रयुक्त ब्लेड व सूई

   (iv) जन्म से पहले या प्रसव के समय माँ द्वारा बच्चे में संक्रमण

   (v) संक्रमित व्यक्ति के कमरे में सोना

   (vi) संक्रमित व्यक्ति को चूमना व उसका आलिंगन करना

टिप्पणी

(vii) संक्रमित व्यक्ति का रक्त स्वस्थ व्यक्ति को चढ़ाना

(viii) संक्रमित व्यक्ति के साथ यौन संबंध

(ix) संक्रमित व्यक्ति के कपड़े पहनना

(x) संक्रमित व्यक्ति के साथ खेलना

2. नीचे दिए गए कथनों को पूर्ण करने के लिए दिए गए चार विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर बताइये।

(i) संक्रमित व्यक्ति के रक्त में एचआईवी के प्रतिपिंड बनने में समय लगता है।

(a) 3 महीने में

(b) 2 सप्ताह में

(c) 2 सप्ताह से 3 महीने में

(d) 3 सप्ताह से 10 वर्ष में

(ii) एचआईवी संक्रमित व्यक्ति में एड्स के लक्षण ..... में प्रकट होते हैं।

(a) दो सप्ताह

(b) तीन महीने

(c) दो सप्ताह से तीन महीने

(d) तीन सप्ताह से दस वर्ष

(iii) एचआईवी संक्रमित व्यक्ति की सुनिश्चित पहचान है जब–

(a) उसका अत्यधिक वजन घटता है

(b) उसका बुखार कई हफ्तों तक नहीं उतरता

(c) उसे निरंतर दस्त रहते हैं

(d) उसके रक्त में प्रतिपिंड पाये जाते हैं

(iv) एड्स एचआईवी नामक विषाणु से फैलता है जो नष्ट करता है –

(a) शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को

(b) शरीर के रक्त परिसंचरण तंत्र को

(c) व्यक्ति की रक्त उत्पादन क्षमता को

(d) व्यक्ति की रक्त में प्रतिपिंड बनाने की क्षमता को

(v) सुरक्षित मातृत्व का अर्थ है

(a) माताओं की मृत्यु दर व अस्वस्थता घटाना

टिप्पणी

(b) जीवित शिशु का जन्म

(c) स्वस्थ बच्चों का लालन पालन

(d) माता के स्वास्थ्य की देखभाल

(vi) निम्न में क्या सुरक्षित मातृत्व के लिये बरती जाने वाली सावधानी नहीं है?

(a) गर्भावस्था के दौरान प्रशिक्षित नर्स या डॉक्टर से परामर्श

(b) प्रसव के समय कुशल व अनुभवी व्यक्ति की उपस्थिति

(c) भ्रूण का लिंग परीक्षण करना

(d) जरा को भलीभाँति बांधकर काटना

3. एड्स तथा एचआईवी का पूर्ण रूप लिखिए।

_____

_____

_____

आपने क्या सीखा

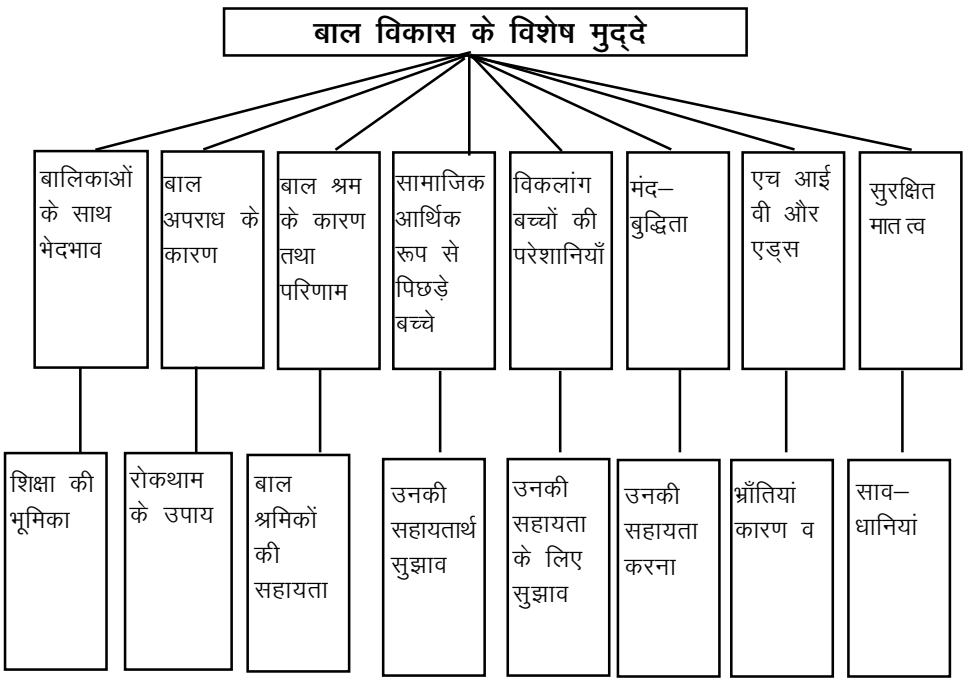

टिप्पणी

पाठान्त प्रश्न

1. बालिकाओं के प्रति बरते जाने वाली विभिन्न भेदभावों की सूची बनाइये और उनमें से किसी एक की विस्तार पूर्वक व्याख्या कीजिये।
2. बालिकाओं के जीवन स्तर को सुधारने में शिक्षा की भूमिका की व्याख्या करिये।
3. बाल अपराध की परिभाषा दीजिये और इसके कारणों पर प्रकाश डालिये।
4. बाल अपराध समस्या से निपटने के लिये क्या–क्या सावधानियाँ बरती जा सकती हैं?
5. बाल श्रम की परिभाषा दीजिये और इसके कारणों की सूची बनाइये।
6. बाल श्रम के परिणामों की व्याख्या कीजिये।
7. बाल श्रम की समस्या से निपटने के तरीकों का विवरण लिखिये।
8. बच्चों की कुछ शारीरिक विकलांगताओं के विषय में लिखिये और ऐसे बच्चों की समस्याओं के विषय में बताइये।
9. आर्थिक व सामाजिक रूप से पिछड़े बच्चे कौन होते हैं? उनकी समस्याओं के विषय में विस्तार से चर्चा कीजिये।
10. मानसिक विकलांगता किसे कहते हैं? ऐसे बच्चे की सहायता के लिये तरीके बताइये।
11. विकलांग बच्चों की सहायता के तरीके सुझाइये।
12. एड्स व एचआईवी का पूर्ण रूप लिखिये।
13. एड्स से संबंधित कुछ भ्रांतियों की व्याख्या कीजिए।
14. सुरक्षित मातृत्व पर एक संक्षिप्त लेख लिखिये।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

21.1 पाठ से पढ़ें।

21.2 पाठ से पढ़ें।

21.3 पाठ से पढ़ें

21.4 (1) पढ़ाना (2) दान और खिलौने (3) पुरानी किताबें और कॉपियां (4) कौशल (5) स्वच्छता (6) शैक्षिक (7) पोषक (8) हस्तकला (9) नैतिक (10) विद्यालय।

21.5 (1) (d) (2) (c) (3) (b) (4) (b) (5) (b)

21.6 (1) (c) (2) (c) (3) (e) (4) (d)

23.7 पाठ से पढ़ें।